निष्कर्ष, निहितार्थ एवं सुझाव

शोध के निष्कर्ष

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

शोध हेतु सुझाव

निष्कर्ष -

स्वतत्रंता के पश्चात देश के नीति निर्माताओं ने भारतीय जन-मानसको बुनियादी सुविधाओं जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, आवास और सांस्कतिक विरासतों इत्यादि को वरीयता सूची में रखते हुए इन पर अमल करना प्रारंभ किया। हम यह भी जानते है कि भारत एक विभिन्न सांस्कृतिक विरासतों से परिपूर्ण देश है और इसकी लगभग 73% आबादी गाँवो में निवास करती है। यहाँ की भाषा, परंपरा, ज्ञान-विज्ञान, रीति-रिवाज, जीवन-शैली, रहन-सहन, खान-पान, संगीत, नृत्य और कलाकृतियों की विविधताएँ देखने को इस देश में मिलती हैं। भारत जैसे देश को संस्कृतियों का देश कहा जाता है जहाँ एक ही संस्कृति नहीं बल्कि हजारों संस्कृतियों को समाहित करके अपनी विशिष्ट संस्कृति का निर्माण करके करीब 1.30 अरब जनसंख्या को एक माला में पिरोकर रखने वाला देश है। इस देश के हर 5 किमी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और यहाँ की हर 30 किमी पर भाषा और बोली में भिन्नता दिखाई पड़ जाती है। अपने देश की सीमाओं में हर देश का निश्चित भौगोलिक सीमाएँ होती है। प्रत्येक देश अपनी मूल संस्कृति को स्थापित किया जाता है। इस देश की सीमाएँ में बधी संस्कृति को देशज संस्कृति कहा जा सकता है।

विश्व पटल पर भारत की पहचान कला, साहित्य, योग, आयुर्वेद उपचार, आदर-सत्कार, अभिवादन, अतिथियों के प्रति स्वागत का भाव, आपस में भाई-चारा का भाव, एक-दूसरे के आपसी सहयोग, विश्व में शांति और कल्याण, पर्यावरण के प्रति सजकता, बड़े-बुजर्गों के प्रति सम्मान, पशु-पक्षियों के प्रति दया-करुणा का भाव, सभी धर्म के प्रति आस्था, आचार्य के प्रति श्रद्धा, पौरोणिक विरासत के प्रति सरंक्षकता इत्यादि अवयवों को लेकर है। इन्हीं अवयवों के कारण भारत की संस्कृति विश्व में ऊँचे पायदान पर अवस्थित है। भारत सरकार ने भी अपनी देशज संस्कृति को सजोएँ रखने के लिए संस्कति मंत्रालय के माध्यम से विभिन्न योजनाओं के चलते कार्यक्रमों को सरंक्षण देकर संस्कृति को एक मंच पर लेन के प्रयास में हैं। फ़िलहाल इस कार्य को करने के लिए संस्कृति मंत्रालय ने IGNCA (इंदिरा गांधी नेशनल कला अकादमी) को नोडल एजेंसी का रूप दिया है।

आज 21वीं सदी के द्वितीय दशक में सूचना प्रौद्योगिकी के युग में देशज संस्कृति का प्रसार करने, सजोए रखने एवं इसकी प्रभावशीलता का अध्ययन हेतु अप्रत्यक्ष रूप से वैकल्पिक मीडिया द्वारा कितनी सार्थकता निभाई जा रही हैं। इस शोध का अध्ययन वर्तमान में शोधार्थी ने इस यू-ट्यूब वेबसाइट की 11

वर्ष अवधि में क्या भारतीयों ने देशज संस्कृति को इस पर अपलोड करके सजोया है और इस वेबसाइट के माध्यम से नई पीढ़ी पर वैकल्पिक मीडिया का क्या प्रभाव रहा है और यदि नहीं तो भी उसमे मीडिया की क्या भूमिका रही हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों एवं संबधित व्यक्तियों से एवं विशेषज्ञों व उनके विश्लेषण करने पर शोधार्थी ने निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किया।

I. इस शोध अध्ययन से प्राप्त आँकडों के अनुसार एवं अध्ययन से निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि भारत की देशज संस्कृति के प्रसार में यू-ट्यूब वेबसाइट और उन पर बने चैनलों का अहमी योगदान है। भारत के आम नागरिक के हृदय में इस वेबसाइट ने कम समय में अपनी जगह और पहचान बना ली है। एक विदेशी वेबसाइट आज के सूचना प्रौद्योगिकी के युग में गूगल की इस सेवा ने विश्व पटल पर अपनी सेवाओं की वजह से तथा लचीली पालिसी के कारण आज इस वेबसाइट ने लोगों को कामयाबी के साथ रोजगार सृजन में भी सार्थक होकर उभर आई है।

II. इस लघु शोध से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार एवं अध्ययन से निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि यू-ट्यूब वेबसाइट के चैनल देशज संस्कृति के विषय-वस्तु को प्रसारित करने अहमी भूमिका निभा रहा है आज भारत के अंदर सैकड़ों चैनलों के माध्यम से देशज संस्कृति को परोसने के लिए प्रयासरत है।

III. इस लघु शोध से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार एवं अध्ययन से निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि यू-ट्यूब वेबसाइट के चैनलों द्वारा प्रसारित देशज संस्कृति भारतीयों द्वारा अपनाई जा रही हैं। यहाँ इन चैनलों पर वीडियो को देखकर आज की पीढ़ी उसी वेशभूषा, पहनावा और संगीत अपने जीवन-शैली में उतार रहे है।

IV. इस लघु शोध से प्राप्त आँकडों एवं अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि यू-ट्यूब वेबसाइट के चैनल देशज संस्कृति पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहा हैं जिस प्रकार से वीडियो के तथ्य है उसी संस्कृति को दर्शक अपने जीवन में ग्रहण करता हुआ दिखाई पड़ता है।

V. इस लघु शोध से प्राप्त आँकडों एवं अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि यू-ट्यूब वीडियो में देशज संस्कृति के प्रभावी कारकों का सकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस अध्ययन से यह पता चलता है देशज संस्कृति के जीतने भी प्रभावी कारक है वों वीडियो में दर्शक को देखने को मिलते हैं।

VI. देशज संस्कृति के यू-टयूब वेबसाइट पर चैनलों में उपलब्ध वीडियो में सारे तत्व उपलब्ध है जो देशज संस्कृति के आवश्यक माने जाते इन वीडियो को देखने से पता चलता है कि संस्कार से लेकर भाषा, पहनावा, संगीत नृत्य की शैली आभूषण का पहनावा इत्यादि इन वीडियो में दिखाई पड़ता है।

VII. इस लघु शोध से प्राप्त आँकडों एवं अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि यू-ट्यूब वेबसाइट के चैनलों द्वारा देशज संस्कृति के प्रसार की प्रभावशीलता का अध्ययन सकारात्मक भरा है एक वीडियो के एक साल में एक करोड़ तक दर्शक देखते है और विदेशों तक उन वीडियो के दर्शक देखने के साथ ही इन पर कमेंट भी लिखते है।

VIII. इस लघु शोध से प्राप्त आँकडों एवं अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि देशज संस्कृति संवर्धन में यू-ट्यूब वेबसाइट से चैनलों का अहमी योगदान आज हर क्षेत्र का छोटे से छोटे कलाकर अपनी कलाकृति को यू-ट्यूब पर चैनल बनकर अपलोड कर रहा है। इन चैनलों का हर साल काफ़ी इजाफ़ा देखने को मिलता है।

IX. इस लघु शोध से प्राप्त आँकडों एवं अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि यू-ट्यूब वेबसाइट के चैनलों पर उपलब्ध देशज संस्कृति के जीवन-शैली, मूल्य, ज्ञान-विज्ञान और रीति-रिवाज एवं परंपराओं का वर्तमान पीढ़ी द्वारा ग्रहणशीलता में सकारात्मक प्रभाव देखने भर आया है आज जो देखा जाता है वों हुबहू जीवन में लाया जाता है। मोबाइल की सूचना क्रांति ने इसे आसान बना दिया है।

X. इस लघु शोध से प्राप्त आँकडों एवं अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि यू-ट्यूब के दर्शकों की 24 वर्ष से 35 के उम्र के लोगों द्वारा ज्यदा मोबाइल के माध्यम से वीडियो को देखने की लोकप्रियता में काफी वृदि दिखाई पड़ रही है। साथ ही फिर एक लबे अंतराल के बाद 60 वर्ष से ऊपर उम्र के दर्शको में भी इसके प्रति लगाव है जो अपने धार्मिक एवं संस्कृतिके बारे में जानने के इच्छुक है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि देशज संस्कृति के प्रसार में यू-ट्यूब वेबसाइट की भूमिका सफलता और उसके बारे में भारतीय ग्रामीण परिपेक्ष्य में देशज संस्कृति को बढ़ावा देने में व्यापक स्तर पर एवं संस्कृति कि प्रस्तुतिकरण करने में वैकल्पिक मीडिया के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है फिर भी अभी वैकल्पिक मीडिया को भारत की देशज संस्कृति को लोगों तक पहुँचाने के लिए और अथक प्रयास करने होंगे।

अनुसन्धान के शैक्षिक निहितार्थ -

जन-मानस तक वैकल्पिक मीडिया से देशज संस्कृति की बुनियादी पहुँच हेतु -

वर्तमान शोध के निष्कर्ष यह इंगित करते है कि 21 वीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी में देश के नीति निर्माताओं ने स्वतंत्र भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने कला के माध्यम से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से पौरोणिक संस्कृति के संवर्धन हेतु कलाकारों को मंच की सुविधाएँ प्रदान करने हेतु प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर 12 वी पंचवर्षीय योजना तक देशज संस्कृति एक महतवपूर्ण आवश्यकता के रूप में समाज के अंतिम व्यक्ति तक को पहुँचाने का प्रयास किया। इसी प्रयास के तहत ही वैकल्पिक मीडिया का यू-ट्यूब वेबसाइट भी 2005 से बुनियादी सेवाएँ देने में सार्थक है। यू-ट्यूब जैसी वेबसाइट के चैनल इस बात की पुष्टि करते है कि वैकल्पिक मीडिया भारत के ग्रामीण अंचलों में निवास कर रही अधिकतर आबादी को भी ज्यादा से ज्यादा वीडियो सेवाएँ से देशज संस्कृति को सजोएँ रखने एवं संस्कृति को सीखने का लाभ प्रदान करवा रही हैं।

संस्कृति से संबधित यू-ट्यूब पर वीडियो चैनलों को क्रियान्वयन के पश्चात अक्सर यह देखा गया कि भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय एवं निजी मीडिया संस्थाओं से लेकर हर क्षेत्रीयता स्तर तक विभिन्न संस्कृति के अवयवों को पहुँचाया है साथ ही संस्कृति के प्रति जागरूकता को बढ़ावा भी दिया है।

मीडिया जनसंचार एवं जन संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक संसाधन हैं, देशज संस्कृति के प्रसार में यू-ट्यूब की भूमिका में संस्कृति के प्रचार-प्रसार से लेकर उसके प्रत्येक सोपान को वांछनीय व्यक्ति तक पहुँचाने एवं उसके प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रस्तुत शोध महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता हैं।

मीडिया संस्थानों के लिए -

किसी भी प्रकार के मीडिया में विषय-वस्तु का चयन संस्थान की विचारधारा के अनुरूप किया जाता है। जिसका प्रकाशन किया जाता हैं। मीडिया में बढ़ती विज्ञापन की मांग ने मीडिया में जनसरोकारी छवि को नुकसान पहुँचाया हैं। इसी व्यापारिक सोच के कारण देशज संस्कृति को मुख्यधारा की मीडिया भारत की पौरोणिक संस्कृति को वास्तविक तस्वीर को समाचारों और अन्य प्रसारण में ज्यादा तवजो नहीं दिया जाता हैं क्योंकि उनको इनसे संबधित ज्यादा से विज्ञापन उस मात्रा में नहीं मिल सकते जो कार्पोरेट घरानों और राजनैतिक व्यक्तियों एवं पार्टियों से मिलते हैं वहीं मीडिया के लिए संस्कृति को प्रसारण से TRP के केंद्र में न होने के कारण विषयवस्तु के स्तर पर उपेक्षित हो जाते हैं। साथ ही मीडिया संस्थानों को ध्यान रखना होगा कि प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सिर्फ व्यापार ही नहीं करना है, वे जन-मानस तक अपनी संस्कृति का प्रभावी रूप को छपने एवं प्रसारण करने का साधन भी है। यदि समाचार पत्रों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से देशज संस्कृति से संबधित अवयवों को छापने एवं प्रसारण करने के प्रति असंवेदनशीलता दिखाई गई तो आज की युवा पीढ़ी की प्रकृति एवं स्वरुप परिवर्तित हो जाएंगे।

मीडिया संस्थानों को चाहिए कि वे देश की संस्कृति को बढ़ावा देने एवं सजोएँ रखने के लिए जन-मानसपहुँचाने में अपनी जिम्मेदारी को भी निभाए। भारत की जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और हमारे देश की संस्कृति के केंद्र गाँव है गाँव के लोगों तक देशज संस्कृति के प्रति प्रकाशितएवं प्रसारण करें। साथ ही जन-मानस तक संस्कृति मंत्रालय द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं से अवगत कराए। मीडिया संस्थानों को चाहिए कि वें पत्रकारिता को मात्र धंधा न बनाए।

मीडिया के शोधार्थियों/विद्यार्थियों के लिए -

मीडिया से संबंधित शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए यह शोध एक ऐसे कार्य के रूप में है जो भारत की देशज संस्कृति के प्रचार-प्रसार की प्रभावशीलता में मीडिया की भूमिका को इंगित करता है। इसके माध्यम से शोधार्थी एवं विद्यार्थी जन-मानस तक देशज भाषा, परंपरा, जीवन-शैली, खान-पान और मूल्यों के प्रति मीडिया की संवेदनशीलता आदि से परिचित हो सकेंगे। साथ ही वे इस क्षेत्र में आने वाली समस्याओं से भी अवगत होंगे। वे यह भी जान सकेंगे की मीडिया का नजरिया देशज संस्कृति को बढ़ावा देने के प्रति

कैसा है? इसके अतिरिक्त वे उन कारणों को भी जान सकेंगे जो भारत की देशज संस्कृति जैसे मुद्दों पर पत्रकारिता को प्रभावित करते है। साथ ही उन्हें ज्ञात होगा कि जन-मानस के लिए किस प्रकार की मीडिया का प्रसार है और उनके प्रति दृष्टिकोण क्या है। शोधार्थी इस अध्ययन से उन समस्याओं के प्रभावी समाधानों के लिए उद्धत होंगे, देशज संस्कृति की परंपरा के प्रसार में पत्रकारों के समक्ष आती हैं। यह शोध समाज की सोच और उनके मतों को शोधार्थियों और विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करता हैं जिससे उन्हें भविष्य में देशज संस्कृति के प्रसार में वैकल्पिक मीडिया की चुनौतियों से तो रूबरू कराता ही है साथ ही यह जन-मानस में वैकल्पिक मीडिया से उम्मीदों को भी इंगित करता हैं। जो शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को एक पत्रकार के रूप सामाजिक रूप से स्थापित होने में सहायक हो सकता हैं।

शोध हेतु सुझाव -

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'देशज संस्कृति के प्रसार में यू-ट्यूब की भूमिका' पर केंद्रित था। अध्ययन के परिणामों, निष्कर्षों एवं सीमांकन के आधार पर इस दिशा में भविष्य में निम्न विषयों पर शोध कार्य किए जा सकते हैं -

I. भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा यू-ट्यूब चैनल को देशज संस्कृति को सजोएँ रखने के लिए एक अलग ही यू-ट्यूब जैसी वीडियो वेबसाईट का निर्माण करना चाहिए, इसे एक प्लेटफार्म तैयार होगा जिसे प्रत्येक क्षेत्र की संस्कृति के वीडियो को स्थापित कर सके। इस साईट वजह से अनगर्ल वीडियो से बचाया जा सके।

II. यू-ट्यूब एक अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक वेबसाईट डोमेन है इसकी वीडियो की श्रेणीयाँ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित है भारत की देशज संस्कृति को इस साईट पर सजोएँ। इसके लिए भिन्न श्रेणीयाँ की और जरुरत है। जिसे संस्कृति के नाम से फूहड़ता भरे वीडियो चैनलों से बचाया जा सके

III. उन मीडिया संस्थाओं और कलाकारों को इन चैनलों को बनाने के प्रति जागरूक करना चाहिए जो केवल देशज संस्कृति के अवयवों को लेकर काम कर रहे है।

IV. इन चैनलों को अपने आज की जरुरत के हिसाब से मोबाइल तकनीकी एप का भी निर्माण करना चाहिए, जिसमे वीडियो को देखा जा सके।

V. वीडियो का विषयवस्तु एवं संपादित करके चैनलों पर अपलोड करना चाहिए।

VI. अनगर्ल वीडियो अपलोड में आज होड़ लगी रहती है। इसके प्रति संस्कृति मंत्रालय संबधित नीति निर्धारित हो। और साईट पर अपलोड होने से पहले उसके मानक निर्धारित हो।

VII. वीडियो से व्यावसायिक उद्देश्य से ज्यादा वीडियो के विषयवस्तु के अवयव पर ध्यान देना चाहिए।

VIII. यू-ट्यूब की नई पालिसी नीति 2015 के क्रियान्वयन में वैकल्पिक मीडिया की भूमिका का अध्ययन भी किया सकता है।

IX. संस्कृति मंत्रालय यू-ट्यूब का रेड वर्जन जैसा नया प्लेटफार्म बनाकर देशज संस्कृति के प्रचार-प्रसार का वास्तविक अध्ययन के लिए प्रयास किया जा सकता है।